।। मुँडत त्यागी बेरागी को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ मुँडत त्यागी बेरागी को अंग लिखंते||

|| साखी ||

सिव के डाढ़ी मूँछ हे || फिर ब्रम्हा के होय ||
रिख सब ही सुखराम के || मुंडत सुण्यो न कोय || १ ||

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज मुंड़ित(मुण्ड़न किए हुए)को कहते है कि महादेव को दाढ़ी मूँछ है,ब्रम्हा को भी दाढ़ी मुंछ है और पहले के हो गये सभी ऋषीयों को दाढी मुछ थी कभी किसी ने भी मुण्ड़न किया है ऐसा किसी ने भी नही सुना । ||१||

डाढी मूँछ बणाई क्रता || फिर सन्कादिक जाण ||
मुँडत सुण सुखराम के || किणे कियो क्हो आण || २ ||

अरे,यह दाढ़ी और मूँछ व सनकादिक(जटा)यह तो कर्ता पुरूष ने याने पैदा करनेवाले ने बनाई है परन्तु मुंड़ित किसने बनाया यह मुझे बताओ ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज मुंड़ित को बोले । ||२||

डाढी मूँझ राम ने कीया || जिण ओ जीव बणायो ||
के सुखराम मुँडत को क्रता || कहो कूण जुग गायो || ३ ||

अरे दाढ़ी मूँछ राम ने बनाई है जिस राम ने यह जीव का देह बनाया । उसी राम ने दाढ़ी और मूंछ बनाई है परन्तु मुंड़ित का कर्ता संसार मे कौन है वह मुझे बताओ ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज मुंड़ित से बोले । ||३||

डाडी मूँछ सिस पर सिखा || अे हर कीया जोय ||
के सुखराम भेष मुँडत को || करण आळो हे कोय || ४ ||

अरे दाढ़ी,मूंछ और सिर पर शिखा यह तो हर ने(राम ने)बनाया है वह देख लो । वह और कोई दूसरे ने बनाया है क्या ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराजने मुंड़ित त्यागी को पुछा । ||४||

मुँडत भेष को कर्ता नाही || तिण मे फेर न कोय ||
के सुखराम मुँछ अर डाढी || राम बणाई जोय || ५ ||

अरे इस मुंड़ित के भेष का कर्ता कोई नही है इसमे फरक मत समझो । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि दाढ़ी और मूंछ तो राम ने बनाई है वह देख लो । ||५||

राम बणाया भेष मे || क्या ओगण सुण माय ||
बिरक्त कूं सुखराम के || तुम ऊतरायो जाय || ६ ||

अरे राम के बनाये हुए दाढ़ी मूंछ के भेष में क्या अवगुण है कि तुम विरक्तो ने याने त्यागी,बैरागी,मुंड़ितो ने उस दाढ़ी मूंछ को उतार दिया ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ||६||

नारी के सुण मुँछ रे || दाडी करी न कोय ||

हर सूं तो सुखराम क्हे ।। छाणी कछू न होय ।। ७ ।।

तो सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि उस बनाने वाले से कोई बात छुपी नही है । उसने देखो स्त्रीयों को दाढी और मूंछ नही बनायी तो उससे याने कर्ता से कुछ छुपा हुआ है ऐसा कुछ भी नही है । ।।७।।

बिरक्त सूं सुखराम के ।। जे हर राजी होय ।।
वो दर्गे सूं मुँडके ।। क्यूँ मेल्योनी जोय ।। ८ ।।

यदी सिर,दाढी और मूंछ मुड़ाने से वह हर(रामजी)खुष होते रहते तो उसने अपनी दरगाह से ही तुम्हारा मुन्ड़न करके क्यों नही भेजा वह देखो । ।।८।।

रूक मये कूं मूंडके ।। ख्याल कियो हर जोय ।।
वाँ पख का सुखराम के ।। विरक्त जग मे होय ।। ९ ।।

रूक्मिणी हरण के समय कृष्ण ने अपना साला रूखामय की दाढी और मूंछ तथा सिर मुन्ड़न करके उसकी मजाक करता था और रूख्मय को मुंड़ित देखकर कृष्ण खुष होकर हंसता था । कृष्ण को हँसता हुआ देखकर एक आदमी ऐसा समझा की सिर मुंड़ाने से श्रीकृष्ण खुश होता है इसलिए हम भी सिर मुंड़ा ले । एक ने अपना सिर मुंड़ा दिया उसे देखकर और भी कितनो ने ही अपनी दाढी मूंछ और सिर मुन्ड़न करा लिया । ऐसा करने से हमे भी कृष्ण देखकर खुष होगा ऐसी समज बना ली व उस दिन से उस पक्ष के लोग मुन्ड़न कराते है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।९।।

सिरक सिरक मुझ क्या करे ।। तुम भी सीर्कण हार ।।
राम बिना सुखराम के ।। को थिर करो बिचार ।। १० ।।

तब उस मुंड़ित ने आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज को सरक–सरक ऐसा बोला तब आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले कि अरे सरक–सरक मुझे तूं क्या करता है । तुम भी सरकने वाले हो । अरे राम के बिना संसार मे कौन स्थिर है इसका तुम विचार करो । ।।१०।।

सिरके पवन नीर भी सिर्के ।। सिर्के देव ओर सब लोई ।।
के सुखराम तके नही सिर्के ।। पथर स्माना होई ।। ११ ।।

अरे यह पवन भी स्थिर नही है इधर उधर सरकता है । पानी भी स्थिर नही है इधर उधर खिसकता है । सभी देव भी स्थिर न रहकर खिसकते रहते है और सभी लोक भी खिसकते रहते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि जो पत्थरके जैसे जड़ है वो सिर्फ नही खिसकते रहते । ।। ११ ।।

रेखता ।।

न्हाय कर धोवणा तिलक छापा करे ।। निपणा चूँपणा नित्त होई ।।
ब्होत प्रकार आचार कूं साझी ये ।। बिष की दिष्ट नही मिटे काई ।।

दास सुखराम के पच मरे बापड़ा ।। राम बेमुख नी मुक्त नाई ।। १ ।।

नहा धोकर स्नान करके,टीका(तिलक)बनाके,छापा(मुद्रा)लगाके,लीपना पोतना नित्य प्रती करके अनेक प्रकार के आचार करता है व अनेक तरह की साधना करता है परन्तु विषयों पर से दृष्टी जरासी भी मिटती नही है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि ये पंड़ित और आचारी बेचारे पच-पच के थक-थक के मर जाते है परन्तु राम से विमुख रहने के कारण इनकी मुक्ती नही होती है । ।।१।।

घर कूं त्याग बनवास कूं निसऱ्यो ।। प्रीत सेंसार सूं नाय होई ।।
अन्न प्रसाद की बात माने नही ।। कंद के फूल खिण खाय सोई ।।
तन्न कूं कष्ट ब्हो भाँत दे जोगीया ।। आतमा देव कूं दु:ख होई ।।
दास सुखराम के पच मरे बापड़ा ।। राम बेमुख नई मुक्त कोई ।। २ ।।

घर को छोड़कर वन मे वनवास करने के लिए निकला । संसार की प्रीती नही रखी व अन्न तथा भोजन की बात भी मालुम नही है,कंद और मूल खोदकर खाता है और इस शरीर को अनेक तरह से कष्ट देता है तो अरे योगीया इस शरीर को कष्ट देने से आत्मदेव को कष्ट होता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि(योगी और त्यागी)ये बापड़े पच-पच के मर जाते है परंतु ये राम से विमुख रहने के कारण इनकी मुक्ती कुछ होती नही । ।।२।।

मून संभाय सेंसार मे निसऱ्या ।। जक्त सूं बोलणो नाही होई ।।
तन का कपड़ा डार निर्भे भया ।। होय निर्बाण मन माँय सोई ।।
राख के बीच मे ग्रक गर्काब हे ।। दिष्ट संसार सूं चित्त गोई ।।
दास सुखराम के पच मरे बापड़ा ।। राम बेमुख नही मुक्त कोई ।। ३ ।।

कितने ही मौन धारण करके संसार से निकले है और संसार से बोलते मुख से नही तथा शरीर के कपड़े फेंककर नंगे बनकर निर्भय हो जाते है और मन मे समझते है कि मै निर्वाण (मुक्त)हो गया हुँ और शरीर पर राख लगाकर उस राख में अखण्ड विभूती लगाकर गर्क हो जाते है परन्तु दृष्टी और चित्त संसार मे वासना मे लगी रहती है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ये बापड़े पच-पच कर मरते है परन्तु राम से बेमुख रहने के कारण, इनकी मुक्ती कहीं भी नही होती है । ।।३।।

त्याग संसार कूं भेष बानो लियो ।। तिर्था ऊठ नर जाय कोई ।।
क्रोड पचास ब्होता दिना भटकिया ।। दु:ख अर सुख बिच रेण खोई ।।
भटक भटकाय अर बेस रहो जोगीया ।। झुँपडी बांध संसार सोई ।।
देस बदेस की बात बखाण करे ।। रात अर दिन बिच ध्यान ओई ।।
तन सूं ऊठ अर साध सेवा करे ।। मन सूं गाँव मे जोय जोई ।।
दास सुखराम के पच मरे बापड़ा ।। राम बेमुख नई मुक्त होई ।। ४ ।।

संसार का त्याग करके भेष का बाना लिया है व कोई उठकर तिर्थ करने के लिए निकल जाता है और पच्चास कोटी(पृथ्वी)को प्रदक्षिणा देते बहुत दिनो तक भटकता रहता है और जहाँ गया वहाँ दु:ख मे दिन व रात पूरी करता । ऐसा भटकना भटकना कर के वे योगी थक कर एक जगह बैठ जाते है और संसार के लोग उनके लिए झोपड़ी बाँध देते है । तो झोपड़ी बाँधना यह भी तो एक संसार ही है फिर वहाँ झोपड़ी बांध के बैठने पर,आये हुए मनुष्यों के सामने देश और विदेश की बातो का वर्णन करता है और रात दिन देखे हुए मुल्क के बातों का उसके मन मे ध्यान रहता है और उस झोपड़ी मे कोई साधू आया तो उठकर अपने शरीर से आये हुए साधू की सेवा करता है । अंगो से तो साधू सेवा करता है परन्तु मन गाँव मे जाकर स्त्रीयो के शरीर देखता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि इसप्रकार से योगी बाबा बापड़े पच-पच कर मर जाते है परंतु इनकी मुक्ती कुछ होती नही । ।।४।।

ऊठ सँवार कूं बांग पुकार दे ।। स्हेर जगाय फकिर सोई ।।
तीन त्रीकाळ निवाज गुदार दे ।। पीर औलीया ओर कोई ।।
माया कूं त्याग अर केत फकिर हे ।। जीव कूं मारके आहार सोई ।।
दास सुखराम के पच मरे बापडा ।। राम बे मुख नई मुक्त कोई ।। ५ ।।

(भोर मे सुबह)उठकर बांग(अज्या)पुकारता है व शहर को जागृत करता है । वह फकीर तीन बार नमाज अदा करता है । ये सभी पीर और अवलिया और दूसरे भी माया को त्याग करके फकीर बनते है और जीव को मारकर उसको खा जाते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि ये दरवेष,मलंग,मुल्ला,फकीर,पीर,पैगम्बर बापड़े पच-पच कर मर जाते है परन्तु ये राम याने खुदा से विमुख रहने के कारण इनकी मुक्ती कुछ होती नही । ।।५।।

पोथीयाँ पानड़ा संग लिया फिरे ।। होय प्रबीण मन माँय सोई ।।
सील संतोष की बात ओरां कहे ।। आपके घट मे ज्हेर होई ।।
ऊजळा कपड़ा पेर कर निसऱ्या ।। रोटीयाँ लावताँ चित्त गोई ।।
दास सुखराम के पच मरे बापड़ा ।। राम बेमुख नई मुक्त कोई ।। ६ ।।

पोथ्याँ,किताबे तथा ग्रन्थो के पन्ने साथ मे लेकर घूमता है और मै बहुत प्रवीण हूँ ऐसा मन मे समझता है और दूसरों को शील धारण करो और संतोष रखो ऐसी बात कहता है परन्तु अपने स्वयं के घट मे विषय वासना भरी हुयी है उसे नही छोड़ता है और उजला कपड़ा पहनकर फिरने निकलता है और उसका रोटी लानेपर चित्त लगा रहा है । रोटी कब लायेगा क्या लायेगा और कैसे लायेगा इसकी तरफ चित्त लगा रहता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ये वानप्रस्थ सन्यासी बापड़े पच-पच कर मरते है परन्तु राम से विमुख होने के कारण इनकी मुक्ती कुछ होती नही है ।।। ६ ।।

अँटियो चुँटियो निर लेता फिरे ।। माया की चाय कुछ नाय होई ।।
अण दिखता जीव को दया ब्होती करे ।। देखता जीव सूं बेर होई ।।
बोलता चालता संग साथे रहे ।। ऊं करे बेर अर धेक दोई ।।
दास सुखराम के पच मरे बापड़ा ।। राम बेमुख नई मुक्त कोई ।। ७ ।।

खरकट्या पानी जो लोगो के उपयोग मे नही आता है ऐसा पानी घर घर से लाते रहते है व माया की(पैसे रूपये की)चाहना कुछ रखते नही है और अदृश्य जो दिखाई नही देते ऐसे जीवो पर बहुत दया करते है और दिखनेवाले जीवो से वैर करते है । बोलते समय,चलते समय अपने साथके जो साथी रहते है उनसे वैर व द्वेष ये दोनो भी करते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ये(ढुंढ्या)पच-पचकर मरते है परन्तु राम से विमुख होने के कारण इनकी मुक्ती कुछ होती नही है । ।। ७ ।।

केत बेराग मुख राग छुटे नई ।। धेक सूं बाद कर पख खाँचे ।।
पाँच पचीस सूँ संग साथे फिरे ।। गाँव मे जाय घर पोढ माँचे ।।
अस्त्री पुर्ष की मेर म्रजाद नही ।। सब ही आन कर बेस पासे ।।
ग्यान बिग्यान मुख त्याग बणाय के ।। मन सो तन मे जाय पेसे ।।
भूत अर प्रेत छळ छेद्र अर सरप कूं ।। चाय बिन संग कोई नाय लेवे ।।
दास सुखराम बिन दुध कोई नही ।। धेन कूं चाटण कुण आण देवे ।। १ ।।

ये मुख से तो वैराग्य याने संसार के विषयों मे आसक्ती प्रीती नही है ऐसा बताते है परन्तु राग याने संसार से प्रीती करके विवाद करते है और अपना पक्ष खीचते है और स्वयं भारी बनते है तथा दूसरों को हल्का जानते है । पांच वासना शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध और ये पच्चीस प्रकृती जहाँ जाता है वहाँ उसके साथ रहती है । गाँव में फिरता है,लोगो के घर जाता है और जाकर लोगों की खाट पर सोता है और वहाँ स्त्री-पुरूष की कोई मेर मर्यादा नही मानता है । सभी स्त्री-पुरूष पास में बैठते है । स्त्रीयाँ भी आकर पास मे बैठती है और उनको ज्ञान की,विज्ञान की तथा त्यागीपन की बाते मुँह से बनाकर कहता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है मन की बात शरीर में बसती है तो जिस बात की किसी को चाहना नही है जैसे भूत-प्रेत,छल-छिद्र तथा सर्प की चाहणा नही है फीर भूत,प्रेत,छल,छिद्र को साथ मे कौन रखेगा । इन्हे साथ मे कौन लेगा । वैसे ही इन त्यागी वैरागीयों को संसार की चाहत नही है तो ये संसार का संग क्यों करते है । गाय दुध नही देती ऐसे गाय को चारा कौन देगा ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।१।।

दिसतो अर्थ सेंसार के माँय हे ।। गत सुं ग्यान सुण समझ आये ।।
जिण सूं हाण बिगाड़ जो ऊंपजे ।। ताय कूं पास कोई नाँय लावे ।।
हेत अर प्रीत ब्हो भांत जिण जीव सूं ।। तूटगी प्रीत मुख नाही बोले ।।

बिष की बेल कूं क्हो कुण सीचसी ।। फूस कूं आण कहो कुण तोले ।।
सरप के ऊपरे हात कुण फेरसी ।। भूत सूं गुँझ किण जाय किवी ।।
बाघ कूं आण कुण खाट के बाँधसी ।। बिष प्रसाद किण जाय लिवी ।।
मही कूँ छाड़ जब ध्रत सो निसरे ।। ताय जब घृत संग छाछ राखे ।।
साच जिण मुख मे साच ही साच हे ।। झूट लवलेस ज्हाँ नही भाखे ।।
असल बेराग तिण पुर्ष कूँ ऊपजे ।। राग अर धेक नही रेहेत कोई ।।
अेक सूं दुसरो पास नही राखसी ।। पाड़ मे बसे संग नाय लोई ।।
बरत के दिन प्रसाद की बात नई ।। भूल कोई अन्न कू नाय पेखे ।।
दास सुखराम बेराग तहाँ ऊपजे ।। नार को मुख सो नाँय देखे ।। २ ।।

यह तो संसार मे स्पष्ट अर्थ है,कि इसकी गती ज्ञान सुनकर समझ मे आयेगा कि जिस बात से हानी होती है और बिगाड़ उत्पन्न होता है उसे पास मे कोई लाता नही और रखता नही है । ऐसे ही इस वैरागी को संसार से अप्रीती होकर वैरागी हुआ फिर ये संसार मे गाँवो मे लोगों के घर क्यों जाता है । इन्हे संसार मे रहने से हानी और बिगाड़ दिखाई दिया इसलिये ये किसी से बोलते भी नही । जिस जीव से प्रीती दोस्ती थी परन्तु उससे प्रीती टूट जाने पर उससे कोई मुख से बोलता भी नही है उसी तरह विष की बेल को कोई पानी देगा क्या वह बताओ । वैसे ही घर के कचड़े को कौन तौलेगा । कचड़े को झाड़कर बाहर फेंक दिए उसे पुन: लाकर कौन तौलेगा । ऐसे ही वैरागी घर छोड़ कर निकल गया वे पुन: घर मे क्यो आयेंगा ।)सर्प के शरीर पर हाथ फिराकर कौन उसका लाड़ करेगा । ऐसे ही वैरागी ने संसारको विषारी सर्प समझकर छोड दिया वह संसारसे पुन: प्रीती क्यों करेगा और भूत से गुप्त गोष्टी कौन करेगा । और वैरागी संसार को भूत समझकर डरकर भाग गया वह संसाररूपी भूत से पुन: बात करेगा क्या?वैसे ही बाघ को लाकर अपनी खाट पर कौन बांधेगा । वैसे ही वैरागी संसार को खानेवाला वाघ समझेगा उस संसाररूपी वाघ को अपनी खाट मे कोई वैरागी बांधेगा क्या? और विष को(जहर को)प्रसाद जानकर कोई खायेगा क्या?वैरागी संसार को जहर समझकर संसार से निकल गया वह पुन: संसाररूपी विष,प्रसाद जानकर खायेगा क्या?जैसे छाछ को छोड़कर मख्खन अलग कीया व मख्खन को तपाकर घी बनाया उस घी मे छाछ रह जानेपर घी खराब हो जाता है । जैसे लोणी छाछ से अलग होता है वैसे ही ये वैरागी संसार रूपी छाछ से अलग हो गये फिर घी पुन: छाछ मे रखने पर बिगड़ जाता है वैसे यह संसार से अलग हुयेवे वैरागी पुन: संसार का संग करने से छाछ के साथ रखने से जैसे घी खराब हो जाता है वैसे ही इनका वैरागीपना बिगड़ जायेगा । जो सत्य बोलता है उसके मुख से निकले हुए शब्द सत्य ही होंगे,झूठा लवलेश मात्र भी वह नही बोलेगा । वैसे ही असल वैरागी मे संसार के विषयोंसे प्रीती,आसक्ती निशान मात्र भी नही रहेगी । जिसे असली वैराग्य

उत्पन्न हो जायेगा वह अकेले ही रहेगा,दूसरों को पास मे नही रखेगा । वह पहाड़ पर जाकर रहेगा। दूसरे मनुष्य को भी साथ मे नही रखेगा । वैसे ही जिसे व्रत(उपवास)है वह उस दिन भोजन की बात भी नही करता है और भूलकर भी अन्न को नही खायेगा । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि मनुष्य को वैराग्य उत्पन्न हो जानेपर वह स्त्री का मुख तक भी नही देखता । ।।२।।

आपको झुँपडो त्याग कर निसऱ्यो ।। ओर के टापरे क्हाँ जावे ।।
सानियो होय घर माँय सूं निसरे ।। ओर घर जाय कुछ स्मज आवे ।।
काम अर काज घर आपका त्यागिया ।। ओर के काम सो जाय धावे ।।
हार पच बस्त कूं बेच दे बावळा ।। होय अधीन को फेर लावे ।।
राव अर रंक सब भूप प्रधान रे ।। चाय बिन पास कोऊँ नाय राखे ।।
अंध कूं आण कोई रूप निरखाय के ।। रात अर दिन बिच नाय भाखे ।।
तूटगी बरत जब कोस कुवे पडयो ।। साँ धियाँ बिना क्यूँ संग होवे ।।
पांव बिन ऊंट नही साथ रे चाड़सी ।। पीड़ बिन पीव कूँ नाही रोवे ।।
हेत अर प्रीत मे बेर तब ऊपनो ।। चाय बिन बोल को संग आवे ।।
दास सुखराम कोई त्याग कर निसऱ्यो । ऊखऱ्यो अन ज्यूं नाँय पावे ।३।

जो अपनी झोपड़ी छोड़कर निकल गया वह दूसरों की झोपड़ी में(मढ़ी,स्थल,रामद्वारा, उपासरा,तक्या,मसीद,वसई,गिरजा,देऊळ,मंदिर,मठ,आसन,अखाड़ा वगैरे में)क्यों जायेगा ?पागल होकर के अपने घर से,धर्म से,पंथ से,निकलकर दूसरे के घर याने दूसरे के धर्म में,या दूसरो के पंथ में जाने से वहाँ उसे कुछ अधिक समझ मिलेगी क्या? जो अपने घर का काम काज छोड़कर वैरागी हो गया वह दूसरो का याने महंत के काम के लिए और अपने गुरू के और अपने चेला –चेलिन के घर के काम के लिए जाकर दौड़ रहा है ये कैसा वैराग्य है?जैसे कोई किसी भी वस्तु से हारकर याने त्रस्त होकर,ऊब कर उस वस्तु को बेच दिया फिर उस वस्तु के आधीन होकर उसी वस्तु को पुन: कौन लायेगा?ऐसे ही संसार से ऊबकर जो संसार छोड़कर निकल गया वह पुन: संसार के आधीन होकर संसार मे आयेगा क्या?)राव और रंक,सभी राजा और प्रधान कोई भी अपनी चाहत के शिवाय किसी को भी अपने पास नही रखता । वैसे ही ये वैरागी संसार की चाहना के बिना पुन: संसार के साथ नही रहेगा । अंधे को अपना रूप,रात या दिन कोई देखने को नही कहेगा और वह अंधा दिन या रात कुछ कह भी नही सकेगा । जब पानी निकालने की रस्सी टूटकर पानी निकालने का बर्तन कुँए मे गिर गया तो उस रस्सी की पुन: गाँठ लगाये बिना उस रस्सी का जोड़ कैसे मिलेगा?वैसे ही वैरागी संसार से अलग हो गया वह पुन: संसार को जोड़े बिना संसार मे रह सकता क्या?ऊँट को खुजली का रोग हुए बिना,उस ऊँट को कौन सांथरा चढ़ायेगा?उस ऊँट को गंधक और तेल

लगाकर ऊँट के नीचे कड़बा बिछाकर उसपर बैठाते है । उसे सांथरा कहते है वैसे ही वैरागी को संसार की चाहणा होने से वैरागी संसार मे आता है और दर्द रहे बिना कोई भी स्त्री पती से रोयेगी नही वैसे ही वैरागी को संसार से मतलब के बिना संसार के लिए रोयेगा नही । वैसे ही बहुत प्रेम प्रीती दोस्ती है परंतु वह प्रिती तुट गयी तो पुन: कोई चाहत के बिना उससे बोलेगा नही और उसके साथ नही जायेगा । वैसे ही वैरागी प्रीती छोड़कर संसार से निकल गये उस वैरागी को पुन: संसार की कोई चाहत के बिना वह संसारी लोगों का संग नही करेगा तथा संसारी लोगों से बोलेगा भी नही । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसे ही कोई संसार का त्याग कर निकला तो खाअी हुयी वस्तुकी उल्टी हो गयी फिर उलटी हुये वे अन्न को कोई पुन: नही खायेगा । वैसे ही संसार को उल्टी के जैसा घृणा करके छोड़कर निकल गया वह पुन: संसार मे आकर नही मिलेगा । ।।३।।

आपही आपके मते सड़ सूं किया ।। काम बिन गाम कोई नाँय जावे ।।
होत मेहे ब्होत ज्हाँ रेत केसे ऊडे ।। निपजी साख क्यूँ काळ आवे ।।
पंछ जब ऊडकर गेण कूँ चालीयो ।। क्हो थिर बेटताँ कुण देख्यो ।।
दास सुखराम बेराग ईण रीत हे ।। संग सेंसार सब झूट पेख्यो ।। ४ ।।

उल्टी अपने आप सड़कर सूख गयी,तो उसकी तरफ कोई नही देखेगा,कोई अपने काम के बिना किसी भी गाँव को कोई नही जायेगा । वैसे ही वैरागी अपने मतलब के बिना संसार में नही आयेगा । जहाँ बहुत ही बारीश हुयी है वहाँ धूल कैसे उड़ेगी?वैसे ही जो पूरा वैरागी हो गया है उसे संसार की चाहना किसलिए होगी और जहाँ फसल अच्छी है वहाँ अकाल क्यों आयेगा?वैसे ही जिस वैरागी को ज्ञान प्राप्त हो गया है उसे पुन: संसार से सम्बन्ध रखने की अज्ञानता क्यों आयेगी?वैसे ही(अनड़)पक्षी आकाश में उड़ जानेपर उसे जमीनपर बैठते हुए कोई देखा है क्या?आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि वैराग इसी रीती का है । वैरागी संसार का संग सभी झूठा समझता है इसलीये संसार त्यागता है । ऐसा वैरागी फीरसे संसारमे रमेगा क्या ? ।।४।।

देख बेराग का लछ कहूँ बावळा ।। सांभळो भेष संसार सारा ।।
सील को ब्रत तिण नार संभावियो ।। पुर्ष सूं बोल नही चलत लारा ।।
श्वान के सीस तब बेग सो चालियो ।। ओर श्वान सूं रोळ नाही ।।
चकवो चकवी रेण को त्याग हे ।। फेर कौ रेण मे मिले माही ।।
अन्न प्रसाद ऊछाँट सूं निसरे ।। प्रीत कर आण को मेल भाणे ।।
अस्त्री पुर्ष के त्याग इण बात को ।। प्रणीयाँ नाँव नही मुख आणे ।।
तेल कूं पील तिल माँय सुं काडीयो ।। फेर करे संग क्यूं रेत भेळा ।।
प्राण कूं छाड़ जब जीव जो निसऱ्यो ।। करत को आण ऊण बक्त बेळा ।।

पान फळ फूल तब ब्रछ सूँ झड़ पड़े ।। फेर को डाळ सूं जाय लागे ।।
नार नर जीव सब सुख सूं पोडीयाँ ।। नींद मे सोय कोई प्रख जागे ।।
राव रजपूत रण खेत मे जुँझसी ।। हेत वाँ जाय को प्रित जोडे ।।
दास सुखराम बेराग ज्हाँ ऊपजे ।। जक्त सूं बोल नही मुख फोडे. ।। ५ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि पगलो,मै तुम्हे वैरागी का लक्षण बताता हूँ वह सभी वेषधारी(साधू)और संसारी(गृहस्थ)सभी लोग सुनो । जिस स्त्री ने शीलव्रत धारण किया है वह किसी भी पुरूष से नही बोलेगी और किसी भी पुरूष के पीछे नही चलेगी । वैसे ही जिसने वैराग्य धारण किया है । वह संसार से नही बोलेगा और संसारी लोगो के साथ भी नही रहेगा । जैसे कुत्ते के सिर में जब दर्द का वेग चलता है तब वह कुत्ता दुसरे कुत्तों से खेल और खोड़ी नही करता है । ऐसे ही जिसे वैराग्य प्राप्त हो गया है वह संसारी लोगों से हँसी या मजाक नही करेगा । जैसे चकवा-चकवी रात को एक जगह पर नही रहते है वे कभी भी रात को एक जगह पर मिलते है क्या वह बताओ । वैसे ही बैरागी जैसे चकवा-चकवी रात को एक जगह मिलते नही उसी तरह पूर्ण वैराग्य जिसे प्राप्त हो गया हो वह वैरागी संसार से नही मिलेगा । अन्न अच्छा-अच्छा खाये थे परन्तु वही अन्न अब उल्टी होकर निकल गया । उस उल्टी के अन्न को प्रीती करके कोई थाली मे रखेगा क्या?वैसे ही वैराग्य प्राप्त होने से संसार को छोड़,वह पुन: संसार को मंजुर करेगा क्या?पहले स्त्री पुरूष जिनकी शादी हो गयी है वो एक दूसरे का नाम नही लेते थे(आज तो सभी लेते है)। तिल को घाणी मे पेरकर तेल निकाल लिया वह तेल पुन: ढेप में कोई रखता नही क्यो की ढेप के साथ तेल खराब हो जाता । वैसे ही संसार से निकले हुए वैरागी साधू पुन: संसार का संग करने से नाश को प्राप्त होंगे । जैसे देह छोड़कर जीव जब निकल जाता है उस जीव और देह को एक जगह पर कौन कर सकता है ऐसे ही वैरागी घर छोड़कर चला गया उसे पुन: घर मे कौन ला सकता है?जैसे वृक्षपर से वृक्ष के पत्ते,फूल और फल झड़कर गिर गये वे पुन: वृक्ष की डाल मे जाकर लग जायेंगे क्या? ऐसी जो वैरागी संसार से निकल गये वे पुन: संसार को लग सकते क्या?जैसे स्त्री-पुरूष जीव सभी सुख से सुषुप्ती में सोये है । वे नींद मे जागृत शरीर की किसी भी प्रकार की परीक्षा जानेगा क्या?ऐसे ही वैरागी वैराग्य अवस्था में संसार को जान सकता क्या?जो राजा लड़ने के लिए रण में जानेपर वहाँ वह किसी से प्रीती,प्रेम,दोस्ती जोड़ेगा क्या?ऐसे ही वैरागी संसार से विरूद्ध हो जाने पर संसारीसे दोस्ती जोड़ेगा क्या?आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि जिसे वैराग्य उत्पन्न हो गया है वह संसार से बोलकर सिर फोड़ किसलिए करेगा? ।।५।।

क्हेत बेराग घर माय घुस्ता फिरे ।। रांड रंडोल कूं ग्यान देवे ।।
आग पर घ्रत अर बाय संग पूर्ष रे ।। बेरीयाँ बास कच्युँ थीर रेवे ।।

सोर संग जामकी, नीर संग प्यास रे ।। रथ संग मन क्युँ चलत प्यादा ।।
कपड़ा रीझ ब्हो भाँत अर ऊजळा ।। रंग संग मेल क्यूँ रेत सांदा ।।
बाघ के संग अबोट क्युँ गाडरी ।। सरप को गरूड कूं संग लावे ।।
दास सुखराम बेराग जाँ ऊपजे ।। नार प्रमोद नही संग चावे ।। ६ ।।

हम बैरागी है ऐसा मुख से कहते है और संसारी लोगो के घर मे घुसते फिरते है और विधवा स्त्री नीच स्वभाव के औरत को ज्ञान बताते है और उनका संग करते है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । अग्नी का संग करने घी पिगल जाता है और कचड़ा हवा से उड़ जाता है । आग याने विधवा औरत के साथ मे घी याने साधूबाबा और वायु याने औरत के संग कचड़ा याने साधूबाबा जैसे कचड़ा उड़ जाता है वैसे ही औरतो की संगती से साधूबाबा का साधूपण उड़ जाता है । वैरी के गाँव में रहनेवाला स्थिर कैसे रहेगा?ऐसे ही ये वैरागी औरतो के साथ से स्थिर कैसे होगे?जैसे आग की चिन्गारी पड़ते ही,बारूद उड़ जाता है वैसे ही जैसे कु स्त्री के संगती से साधूबाबा उड़ जाता है । जिस के पास पानी है वह प्यासा रहेगा क्या?ऐसे ही पानी रूपी स्त्री के संग साधूबाबा काम वासना की प्यास बुझाये बिना रहेंगे क्या?तो दुश्मन के गाँव मे रहने वाला स्थिर कैसे रहेगा?ऐसे ही ये वैरागी स्त्री के संग से स्थिर कैसे रह सकते? जिसके पास पानी है वह प्यासा रहेगा क्या?वैसे ही पानी रूपी औरत के संग से,साधूबाबा काम वासना की प्यास मिटाये बिना रहेंगे क्या?साथ रथ गाड़ी है फीर पैरोसे चलने वाले का बैठने को मन नही होगा क्या? गाड़ी पर बैठने को उसका मन जायेगा ही जायेगा ।(वैसे ही साधू और स्त्रीयों का संग समझो । वैसे ही स्त्री रूपी गाड़ी के संग साधू बाबा पैदल चलेंगे क्या?साधू बाबा का गाड़ी पर बैठने का मन नही होगा क्या?कपड़ा कितना भी उजला रहा,तो भी रंग की संगती से रंग लगकर,दागवाला होकर गंदा होगा ही । वैसे ही साधूबाबा बहुत प्रकार से उज्वल–निर्मल रहे तो भी रंग रूपी स्त्री के संग से साधू बाबा को दाग लगेगा ही लगेगा । बेदाग रहेगा नही । जैसे वाघ के पास भेड़(औरत)रहने पर,वह वाघ (साधूबाबा)भेड़ को हाथ लगाये बिना उस भेड़ को छोड़ेगा क्या?वैसे ही सर्प गरूड़ का संग क्यो करेगा?(तो सर्प रूपी वैरागी संसाररूपी गरूड़ के साथ कैसे बचकर रहेगा?)आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि जिसे वैराग उत्पन्न हो गया है,वह स्त्रीयों को उपदेश देकर उनके साथ रहने की चाहना नही करेगा ? ।।६।।

कवत ।।

नर नारी घर माँय ।। ढिग आसण नही कीजे ।।
जोगी की पत जाय ।। तन अग्नी बिन छीजे ।।
ज्हाँ नारी पग फिरे ।। असल जोगी नही जावे ।।
कोई करे बेरीयाँ बास ।। कदे कन गोतो खावे ।।

पाणी पेली पाज ।। बाँध नर सोई जीते ।।
जन सुखीया बेराग ।। जतन करताँ दिन बीते ।। ७ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि स्त्री–पुरूष एक ही घर मे,पास–पास आसन नही करते । पास पास मे आसन करने से योगी की पत चली जाती है । उसका शरीर अग्नी के बिना क्षीण हो जाता है । जहाँ तक स्त्रीयों के पैर फिरते है वहाँ तक असली जोगी नही जाता । कोई वैरियों मे(शत्रुओं में)निवास करेगा,तो वह कभी ना कभी तो गोता खायेगा ही । जो बारीश के पहले बांध बांधता है वही मनुष्य जीतेगा । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि यत्न करते करते वैरागीयो के दिन व्यतीत होते है परन्तु इन वैरागीयों मे जती स्वभाव का वैरागी कोई बनते नही दिखता । ।।७।।

जन त्यागी ब्हो जाण ।। जति जग छेई बताया ।।
ओ तम करो बिचार ।। ओर क्हो क्हाँ रहीया ।।
पच पच मरे अनेक ।। त्याग सो सार न आवे ।।
नव द्रवाजा जाण ।। काम सो नित प्रत जावे ।।
भावे केळी जाय ।। जमी पर ढुळ हे सोई ।।
जन सुखिया बेकाम ।। ताय को क्या पुन होई ।। ८ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि स्त्रीयों का त्याग करनेवाले संसार मे बहुत हो गये परन्तु आज तक संसार में यती(हनुमान,लक्ष्मण,गोरक्षनाथ,कार्तीक स्वामी,सुकदेव,गरूड़ आदी छःही हुए है फीर बाकी के स्त्रीयों को त्याग करनेवाले कहाँ रह गये है इसका विचार करो । स्त्रीयों का त्याग करके थक–थक कर अनेक मर गये परन्तु उन्हें त्याग का सार आया नही मतलब सातवाँ यती कोई नही हुआ । शरीर के नवो दरवाजों से नित्य प्रती काम(वीर्य) जाता है । कअी तो अपने आप या क्रिड़ा खेल करने में सभी वीर्य जमीन पर ड़ालते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि अमुल्य वस्तु व्यर्थ गयी उसका उसे क्या पुण्य होगा ? ।।८।।

क्हो इण जग सेंसार ।। जक्त मे मीठो काँई ।।
ताँ को करो बिचार ।। कान सुण स्मझो माँई ।।
घि गुळ खाँड निवात ।।----------।।
अे जुग मीठा जाण ।। अरथ बुझ्याँ फुर्माया ।।
साचो अरथ बणाय ।। सुणत सब कोई माने ।।
मीठी जग मे चाय ।। नाँव सुखदेव बखाणे ।। ९ ।।

तो बताओ इस जगत में संसार में मीठा क्या है? इसका विचार करो । कान से सुनकर मन में विचार करो की घी है,गुड़ है,शक्कर है और मिश्री है और भी इसके बनाये हुए पकवान है ? मै खरा अर्थ बताता हूँ । संसार में मीठी तो चाहणा है । जिस बात की

चाहना होगी वही बात मीठी लगेगी । तम्बाकू चाहनेवाले को घी की अपेक्षा भी मीठी तम्बाकू है और आफू(अफीम) जहर है । आफू खाने से मनुष्य मर जाता है । वही आफू,आफू का चाहनेवाला मनुष्य घर का घी बेचकर बिकत लाता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बताते है की जीसे नाम की चाहणा है उसे नाम मीठा लगता है । ।।९।।

सुण सार्दुलो सिंह ।। जीव केता संग होई ।।
सती जळण कूँ जाय ।। गोत सूं हेत न कोई ।।
रण जूंझे रजपूत ।। व्हाँ कौ हेत जणावे ।।
नारी ऊपर नार ।। आप कोई चायर लावे ।।
ज्याँ ऊपज्यां बेराग ।। तां ही की मूठ करारी ।।
जन सुखिया तन मज ।। जक्त की प्रीत बिडारी ।। १० ।।

जैसे(सार्दुल)सिंह अपने साथ कोई भी जीव रखता है क्या?और सती(अपने पती की लाश के साथ)जलने को जाती है । वह अपने पीछे कुटुम्बी,गोत्र(लड़के–लड़की आदी)किसी से भी प्रीती करती है क्या? जो राजपुत रण मे जाकर जूँझता है वहाँ जाकर वह किसी से भी प्रीती नही दिखाता । वैसे ही वैरागी संसार मे किसी से भी प्रीती नही दिखाते है । कोई औरत किसी दूसरी औरत पर चाहना करके सौतन लायेगी क्या?जहाँ वैराग उत्पन्न हुआ है उनकी मूठ (पकड़)ऐसी मजबूत है कि वे अपने शरीर मे से जगत की प्रीती निकाल कर भगा देते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । । ।।१०।।

भरतर के बेराग ।। और गोरख गत जाणी ।।
चर्पट त्यागी न्याय ।। दत्त मुख बोल्या बाणी ।।
गोपीचंद सत जाण ।। भर्तरी साच कमायो ।।
स्हेर ऊजीणी त्याग ।। फेर बस्ती नही आयो ।।
जाँजूल लगी स्माद ।। देहे की गम न काई ।।
जन सुखिया बेराग ।। जाण अेसी बिध पाई ।। ११ ।।

देखो असली वैराग्य भूतृहरी का है और इस वैराग की गोरखनाथ ने गती जाणी है । चर्पट और त्यागीपन का न्याय दत्तात्रेय ने अपने मुख से बोला । गोपीचन्द खरा त्यागी समझो और भर्तृहरी ने खरा वैराग्य कमाया की जिस भर्तृहरी ने उज्जयनी शहर का राज्य त्यागकर पुन: वह गाँव मे आया नही । जांजुली ऋषी को समाधी लगी उसे उसकी देह तक की सुध रही नही । उसकी जटा में चिड़ियो ने घोसले बना दिए थे । तो आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि खरा वैराग जिसे मिला है वो इस विधी का है । ।।११।।

रेखता ||

मद बेराग की चाल ब्हो कठण हे || धार कोई निसरे सूर पूरा ||
सीस कूँ काट सिर हाथ मे मेल हे || भ्रम अर क्रम भै डार दूरा ||
आस घर पास कहूँ जात नही चाल कर || जक्त प्रमोद नही देत कोई ||
दु:ख अर सुख दोऊं सम कर जाणीया || जग की लाज सबे अब खोई ||
सानियो क्हेत संसार सुण लोय रे || गाँव मे टुकड़ा मांग खावे ||
आखी आध कोऊ लेत नही रोटीयाँ || श्वान के कान भर टूक चावे ||
नदी की तीर, तळाब की पाळ रे || टुकडा जळ सुं भेय लेवे ||
स्वाद बे स्वाद की बात नही गाँठसी || जक्त सूं बोल नही जाब देवे ||
नाँव मतवाळ मे रंग राता रहे || हर्ख खुसाल मे दिन जावे ||
दास सुखराम बेराग ईण रीत हे || जक्त के पास घर नाही आवे || १२ ||

मद वैराग्य(पाँच इन्द्रियों को लौटाकर घर मे लावो और एक ब्रम्ह का ही ध्यान करके दूसरे सभी माया के धर्म छोड़ दो इसे मद वैराग्य कहते है । इस मद वैराग की चाल बहुत कठिन है । इस मद वैराग को धारण करके जो पूरे शूरवीर संत है वही इस वैराग को धारण करके निकले है । जिसने अपना सिर उतारकर अपनी हथेली पर ले लिया है और भ्रम(वेद,शास्त्र,पुराण), कर्म(कर्मकाण्ड),भय(स्वर्ग–नर्क का)इसे दूर फेक दिया है । किसी तरह की कर्म फल की या देवो की कैसी भी ही आशा नही रखते । किसी के भी घर या किसी के पास चलकर जाते नही है और संसार को उपदेश भी नही देते । दु:ख और सुख इन दोनो को समान समझते है और संसार की लाज उन्होने सभी छोड़ दी । सभी संसारी लोग उन्हे पगला कहते है और वह गाँवो से रोटी का टुकड़ा मांगकर उदर निर्वाह करते है । इसके टुकड़े मांगने पर उसे कोई पूरी या आधी रोटी दिया,तो वह लेता नही है । वह कुत्ते के कान के बराबर टुकड़ा लेना चाहता है । इस प्रकार से प्रत्येक घर के टुकड़े जमा करके नदी के किनारे या तालाब के घाट पर,वह रोटी का टुकड़ा पानी मे भिगो खाता है । जिसे स्वाद या बेस्वाद बात ही समझती नही है और वह स्वत: संसार में किसी से बोलता नही और किसी ने कुछ पूछा तो उस पूछनेवाले को जबाब भी नही देता है । रामनाम के रंग मे रंग जाता है और हर्ष खुषियाली मे उसका दिन व्यतीत होता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि वैराग्य इस रीति का है । तो वह वैरागी हो गया । वह किसी भी मनुष्य के पास,संसार के या किसी के भी घर पर नही आयेगा । ||१२||

आठ बड़ पोहोर मे ग्यान अेसो करे || ब्रम्ह ही ब्रम्ह हे अेक माया ||
पाँच पचीस मिल तीन सुण सात रे || पिंड ब्रहमंड मे देख भाया ||
आत्मा देव सब माय कूं अेक हे || ब्रम्ह कूं चीन तन माहे लीजे ||

पाँच भूत आत्मा म्हेल ज्हाँ दिखीयो ।। आप सूं बणे ते सुख जाय दीजे ।।
ग्यान बँबेक बिचार ब्हो भाँत क्हे ।। क्हेण मे कसर ना राख काई ।।
चालबो हालबो रेण बो कठण हे ।। धारबो क्रोड मझ देख भाई ।।
केण सो रेण तिण संत मे कसर नई ।। धिन्न औतार भु लोक माई ।।
दास सुखराम वे संत जन ब्रम्ह हे । मिलत ही भ्रम सब तिंवर जाई ।।१३।।

और आठों प्रहर ऐसा ज्ञान संसार को बताता की सभी ब्रम्ह ही ब्रम्ह है । यह सभी एक ही माया है । कोश पांच-(१-अन्नमय,२-प्राणमय,३-मनोमय,४-विज्ञानमय,५-आनन्दमय), वायु पाँच(१-नाग,२-कुर्म,३-कुर्कल,४-देवदत्त,५-धनंजय)पच्चीस प्रकृती और तीन अवस्था(१-जागृत,२-स्वप्न३-सुषुप्ती),आनन्दतीन (१-ब्रम्हानन्द,२-विषयानन्द, ३वासनानन्द),ताप तीन(१-अध्यात्म,२-अधिदैव,३-अधिभूत),प्राणायाम तीन(१-रेचक, २-पूरक,३-कुम्भक), सात धातु(१-रस,२-रूधीर,३-मास,४-मेद,५-मज्जा,६-अस्थी,७-रेत) ये सब ब्रम्हाण्ड मे है वही पिण्ड मे देखता है । आत्मा यह आत्मदेव है व आत्मदेव सभी मे एक ही है । सभी घटघट मे ब्रम्ह भरा हुआ है ऐसा अपने शरीर मे ब्रम्ह को पहचान लो । मतलब अपनी आत्मा ब्रम्ह ही है ऐसा पहचान लो । पंचभूती आत्मा,आत्मा का(आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी),से बना हुआ महल(शरीर)है,उस पंचभूती आत्मा को जाकर सुख दो । बहुत तरह से ज्ञान कहो, विवेक बताओ,विचार बोलो और बताने मे कोई कसर मत रखो ।(संतो के जैसे)हिलना-चलना,रहना बहुत कठिन है परन्तु ऐसी धारणा सौ लाख मे एकाध की मिलेगी । जैसा बोलता वैसा रहता है और रहणी रहकर बोलने जैसा चलता है । उस संत में संतपन की कमी कुछ भी नही है । उसका इस भूलोक पर अवतार लेना धन्य है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि वे संत तो अपने आप स्वयं सतस्वरुप ब्रम्ह ही है । उनसे मिलने पर कुल,गोत्र, जाती,वर्ण,आश्रम,नाम इसप्रकार के छः भर्म तिमीर(अज्ञान,अंधकार),(द्वैत को अद्वैत मानना), ऐसा भ्रम तिमीर चला जाता है । ।।१३।।

मान मरोड़ मन माँय छोड़े नही ।। चूँप ब्हो भांत कर अंग सवारे ।।
गेर गंभीर गुमान मन गाढ मे ।। बात मे बात ले पेच डारे ।।
आप सतोल व्हे ओर हळका गिणे ।। चाय संग बात कूं मोड़ लावे ।।
सिष के काज सो संत सूँ लड़ पड़े ।। द्रब चाय ले पास जावे ।।
टेल करे बंदगी पेम प्रतित से ।। भाव गुण सेत ले रिण भाखे ।।
द्रब बिन चाडीया मन माने नही ।। सिष को पोख दे नाही राखे ।।
बेण मुख माँय सूं निसरे पखले ।। पुजीयाँ मन सो जोर राजी ।।
दास सुखराम के राम सर्णो लियो ।। जात अर न्यात रो मान पाजी ।।१४।।

मन मे मान पालता है,कि लोगो ने मेरा मान करना चाहिए । ऐट मन से छूटती नही

है,बहुत कारीगरी से अंगो को सँवारता है,सजाता है और मन मे बहुत गहरा गम्भीर बना हुआ रहता है और मन मे बहुत गाठ गुमान कड़ा रखता है । बातो मे बात लाकर अपने पेच की बात ड़ालता है । और खुद को भारी मानता तथा दूसरो को हल्का समझता है तथा जैसी अपने मन मे जिस बात की चाहना रहती,वैसी बात मोड़कर अपनी चाहना के जैसा,बात घुमाकर लाता है और शिष्यों के लिए संतो से झगड़ा करता है और द्रव्य की चाहना से(धनवान)शिष्य के पास जाता है । शिष्य मंड़ली,टहल बंदगी(सेवा चाकरी),प्रेम व प्रीती से विश्वास से करती है व शिष्य मंड़ली उसका भाव रखकर,उसके गुण का वर्णन करते है । और वह अपना रोना रो–रोकर लाचारी बोलकर दिखाता है और अपना यहाँ का खर्च दिखाकर शिष्य से खर्च मागता है । वह शिष्य को पोसनेका आश्वासन देता है परंतु पोसता नही और मुख से जो बोलेगा,तो वह पक्ष लेकर बोलेगा और उसकी जो पूजा करेगा उस पूजा करने वालेपर उसका मन बहुत राजी रहता है तो आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि मैने राम की शरण लिया है,ऐसा कहता है । परन्तु वह तो जाती का और न्याती का मान चाहता है मतलब वह तो पाजी है, कपटी है । ।।१४।।

देहे बुहार सेंसार सा देखणा ।। माहे सब चूर ब्रेहेमंड जावे ।।
साध की बात कहूँ अगम अगाध हे ।। जगत कूँ भेद नही अर्थ आवे ।।
होत सब बात सो नाँव के आसरे ।। आपकी बात नही थाप काँई ।।
समंद मे आड यूं तिरत जळ ऊपरे ।। पांख सो नीर नही भिदे माँई ।।
तेल कडाव ऊकाळ संसार में ।। सूर बिदमान सब माँय देखे ।।
दास सुखराम इम सांध संसार मे ।। दु:ख अर सुख सब झूट पेखे ।। १५ ।।

संत के देह का व्यवहार,(खाना,पीना,भोग,विलास वगैरे सभी) संसार के जैसा ही रहता है । बाहर से तो वे दुसरे मनुष्य के जैसे दिखाई देते है परन्तु अन्दर की सभी गाठें और स्थान का छेदन करके,ब्रम्हांण्ड़ मे पहुँचे हुये रहते है । साधू की बात तो मै बताता हूँ वह अगम जिसकी किसी को भी गम नही तथा अगाध किसीको थाह नही ऐसी है । उनका संसार के लोगो को भेद मालुम नही है तथा अर्थ भी नही आता है । उनकी सभी बाते नाम के आसरे से होती है । वे अपनी बात कुछ भी स्थापीत नही करते है । जो होता सब नाम के आसरे से होता है ऐसा कहते है व मैने किया ऐसा,वे कुछ बोलते नही है । जैसे सरोवर मे आड़ नाव का पक्षी पानी मे तैरते रहता परन्तु उसके पंख को पानी नही लगता है । वह पानी मे से सूखा ही निकलता है ।)पानी मे पर तैरता है परन्तु पानी उसके पंख को भेदता नही है । जैसे कढ़ाही में तेल उबलता है उसमे सुर्य दिखाई देता है परन्तु वह सुर्य अलग ही है सुर्य तेल मे तला नही जाता है वैसे ही संत जन संसार मे रहकर संसार से अलग है । वे संसार के दु:ख और सुख सभी झूठे समझते है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ।।१५।।

कुंडल्या ||

कीड़ा के सिर मिण नही || भावे ईजगर होय ||
रत्न न पावे खाबड़ा || चवड़ा ऊंडा जोय ||
चवड़ा ऊंडा जोय || रिड़कल्या चंदण न होई ||
मोती भेंसे सीस ||अेक आधो नही कोई ||
सुखराम केहे गृह भेष मे || ज्हाँ तहाँ भक्त न होय ||
कीड़ा के सिर मिण नही || भावे ईजगर होय || १६ ||

सभी सापो के सिर मे मणी नही रहती है । कितना भी बड़ा अजगर हो गया तो भी उसके सिर मे मणी नही होती है और कितना भी पानी से भरा हुआ बड़ा गड्ढा लम्बा चौडा और गहरा रहा तो भी उसमे रत्न नही मिलेगा । उसी तरह से बरड़ जमीन पर चन्दन के पेड़ नही होता । भैसा कैसा भी जबर रहा तो भी उसके सिर मे एक भी मोती नही मिलेगा । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि गृह मे या वेषधारीयों मे जहाँ–तहाँ सभी जगह सतस्वरुपी भक्त नही होते है । जैसे सभी सर्पो के सिर मे मणी नही होती चाहे वह अजगर ही क्यों न हो वैसे ही सभी जगह सतस्वरुपी भक्त नही होते है । ||१६||

स्हा न देख्या ढाणीयाँ || भुप न गाँवा माय ||
हंस न देख्या खाबड़ाँ || जाड़ा मे सिंघ नाय ||
जाड़ा मे सिंघ नाय || गरूड़ कोई जंगल जोवे ||
अनड़ पंख आकास || भाँय पर कदेन होवे ||
सुखराम क्हे ज्हाँ तँहा हरी || पूँथा संत तज नाय ||
साह न देख्या ढाणीया || भुप न गाँवा माय || १७ ||

जंगलो की झोपड़ी मे साहुकार दिखता नही है और देहाती गाँवो मे राजा नही रहता है और पानी से भरे हुये बड़े गड्ढे मे हंस नही दिखायी देता है तथा घास की झाड़ीयों में सिंह नही दिखायी देता है और कोई जंगल मे गरूड़ देखेगा तो गरूड जंगल मे नही मिलेगा । जो आकाश मे रहनेवाला अनड़ पक्षी है वह जमीन पर कभी भी नही रहेगा । वैसे ही आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है जैसे जंगल की झोपड़ी मे सावकार नही होता और राजा देहाती गावों मे नही होता है उसी तरह से जहाँ तहाँ पहुँचे सतस्वरुपी संत नही होते । ||१७||

|| इति मुंडत त्यागी बेरागी को अंग संपूरण ||